

मुट्ठी भर उजियाळौ

संजय आचार्य 'वरुण'

शशधर प्रकाशन

14/161, मुक्ता प्रसाद नगर, बीकानेर



राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर रै आंशिक आर्थिक सैयोग सूं प्रकाशित

२२
६१५

© संजय आचार्य वरुण
मुस्तक : मुट्ठी भर उजियाळौ
सरकरण प्रथम : 2003

प्रकाशक .

शशधर प्रकाशन

14 / 161, मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर 334 001

आवरण : रवि शकर आचार्य

मूल्य : सौ रूपये

मुद्रक : जनसेवी प्रिन्टर्स, दाऊजी मदिर भवन, बीकानेर
दूरभाष : 200495

शब्द संयोजन : एस.एस. कम्प्यूटर्स, बीकानेर

‘मुट्ठी भर उजियाळी’ देख’र.....

शब्दों की ध्वनियों के अनुशासन का निर्वाह करते हुए ‘वरुण’ को पहली बार सुना तो मैं ठिठक गया था, सोचा, इस तरह कई बार ठिठकूँ, सीधे संवाद की मेरी पहल पर एक ओर पीढ़ी का अन्तराल आखड़ा हुआ तो दूसरी ओर मेरी यायावरी..... आज बोई ‘वरुण’ म्हारै सामै है, म्हने वेरी बंद मुट्ठी सू आखरा री उजास छणीजती दीसै। देखतां-देखतां ई सुणन लागू- ‘ए म्हे आखर रचणिया हाथां ऊपर निपाट ऊघडै वी सू पैल थे ई उजास ऊन-ठर’र एक ओळियो मांड’र बताओी कै ‘मुट्ठी भर “उजियाडै” रै आखरां री रंगत कोरी सफेद झक्क है कै सूरज री गायां रा सात रंग भी भळकै.....

कहावर कमतरिये री अपणाणौ कै आपरै आखरां रै उजास री जातरा करण री अवसर दियो, ई उजास में म्हने गांव री सून्याड, सैर री भागम-भाग, मसीन, पुरजा तो दीस्या ई, ई मेई गाव री गवई री परोटण भी लागी, सैर रै अळूजाड में नाता-गिना नै सुळजावता जतन भी बोलता सुणीज्या।

‘वरुण’ नै पैलीवार तो पोसवाळ-विद्यापीठां सू सीख्योडी भासा में सुणियो, आज रै दिन आचळ री छिया में सीचीजी बोली ने अरथाऊ भासा री रूप रच’र लायो है, म्हे म्हारी वाथां तो खोलुई।

उजास में अधारो भोगतो अर अधारे में उजास खोजतो ‘वरुण’ आसा-पास खोजती खुद नै भी खोजण-पिछाण रा जतन करै ‘वो कूण है’, ‘हूँ कूण हूँ’ ‘ए-वे-सै’ न्यारा-न्यारा है’ कै इकजा। उत्तर-पडूतर सोधतो ‘वरुण’ एकल सुर में अजान-झालर सुणै। सुण-सुणती मानखै रै धरम री पैलो अ माडै। मांडती-मांडती दीयावाती तो देखैई। अठै चो आ भी मानलै कै जंगळ रै गूंगे अधारे में चालाणी घीत्योडै बटाऊ रै हीये में घानणौ तो होसीई। आपरी जागती ‘लालटेण’ नै बुझावण में भी संको नी करै। ‘वरुण’ री आ पडताल सरावणजोग है कै कांघ रै सामै होण री आपरी डर समेट’र उजास रै झुटपटे में सामली आख्या में देख भी लै और देखाय भी दे। ए कवितावां एकल रूप में आपरी अर्थ बतावती आ तो कैई जावै कै - “म्हां आखरा में निजृपणै री पिछाण समाजू सरोकार रै लारै चालै.....” ई पाठक रै हियै भी आ बात जमै कै आपरै आखै चार नै आपरै माय समोवतो ई

तो आपरै निजूपणे ने पग्ग्वै, - तो ले - पग्गेने ई रे पेटे ई सवठ
रचना-रूप धारण करै।

‘वरुण’ जिकै हेमाणी आगणे मे रेवे-सोवे भळै आपरै मायली
पुरतां ने खोलै, वठे तीन सईका एक सागे जृण रा कळाप करता दीमै।
वांरी छिया तो आ आखरां मे छव-छवती लागे, वरुण नै ठा ही कैला
के आथूणे कृआं गैरा खुदे, जणे कटेई जांर पाणी सू चारो भरीजे, ई
खातर उतार-खिचाण री मारण मोकळी लागीं राखणी पड़े.....अणी
सागे “आयी.....आयी....” रा सुर भी गुंज्या करे।

‘वरुण’ री दौठ री डोर लांबा होवै, वा मिनखाजृण रे सोच
री गुफाआं मे धुणीजता-तणीजता अणूजां नै छुर ई नी, आपरै आखरा
रे चारे मे भर-भरती तावडे लावे, इण सारू कामना, म्हारो घणी-घणौ
हेत म्हने भरोसो हे के आखरां री राग मे आपरी होणणे परोटता ‘अना
कारीगर’ ‘मुट्ठी भर “उजियाळौ” मे आज रे सागे-सागे अगम भी
भाखसी

पेथी री रूप लेण मृ पेल्ला आ पांजां रे सिरे-पेटे री जातरा
रो मुख म्हे अवेर राख्यो हे - ‘वरुण’ रे वाम्ते म्हारी ओर मृ चरेवेति.
...चरेवेति.....

-इरीश भादानी
भर्नाली घाटी, नीकनेर

म्हारी बात

आज आपरै हाथां में 'मुट्ठी भर उजियाळी सूपतां थकां म्हनै भी हरेक सिरजक री भांत घणौ उमाव हुय रह्यौ है पण साथै साथै म्हारै मन में आ बात आ रह्यौ है के म्हें जिण अपार उजास री अडीक में ओ 'मुट्ठी भर उजियाळी' रच्यौ है वो कदे आसी भी या फगत आपां री कलम सुपना री स्याही सूं कागद सजावती रैसी। उजास या उजियाळी ही जिनगाणी री सकारात्मक पख है, इण शब्द री सबसूं मोटी विशेषता आ ही'ज है के ओ हिरदै में आत्मविश्वास धरपण आळी शब्द है। म्हनै लखावै के उजियाळी एक इसै विश्वास री नांव है जिके रै दम पर एक छोटो सौ दिवली अपार अंधारै सूं सदा ई लड़ती रैवे अर हमेशा सावित करै के पहाड़ जितरै अंधारै ने मेटण सारख पगत एक मुट्ठी उजियाळी घणौ है। आपां जाणां हां के जीवण रै हरेक पख में उजियाळी अर अंधारी हुवै। म्हें इण रचनावां में उजियाळी अर अंधारै ने भांत भांत री धीठ सूं देखण री कोशिश करी है। म्हनै लखावै के आपां रै वखत री हरेक क्षेत्र घोर अंधारै री चपेट में आयोड़ी है। राजनीति, शिक्षा, संस्कृति पर छायोड़ी अंधकार सूं मिनखा पणौ, नैतिकता कर्तव्य अर ईमानदारी जिराी केई चीजां ओझळ हुयगी है अर की हुवती जाय रैयी है। आपां नै आपां रै हिरदै रों अंधकार मेट'र इण जुग ने पाछी उजास सूं भरणी चाहिये। आपां मांय सूं एक एक मिनख एक एक मुट्ठी उजियाळी ले'र निकळसी तो इत्तौ उजास हुय जासी के विकराळ सूं विकराळ अंधारै री अस्तित्व भी हिल जासी।

ओ 'मुट्ठी भर उजियाळी' संसार रै किणी भी तरै रै अपार अंधारै रै एक कतरै ने भी मेट सक्यौ तो म्हें इण रै सिरजण ने सारथक समझूला।

म्हारि मन में सिग्जण गी उजारस थग्पण आळा म्हारा
 सिग्जक श्री गौरीशंकर जी आचार्य 'अरुण' म्हारा आदर्श कवि,
 आदर्श शिक्षक अर आदर्श पिता है, इण पोथी री प्रकाशन इयां री
 मार्गदर्शन अर आशीर्वाद री सुफल है अर सागे इं वडा भाई श्री
 हरीश बी.शर्मा गी भूमिका सायत म्हारि रूं भी ज्यादा महताऊ रैयी
 है आदर् जोग श्री हरीश भादानी जी अर श्री चाँदरतन जी
 आचार्यरी हाथ भी म्हारि सिर माथे रैयी है। भाई
 श्री कुलदीप जनसेवी जी री मैणत अर रैयोग रूं आज 'मुट्ठी भर
 उजियाली' आप रै हाथां में है।

- संजय आचार्य 'वरुण'



ममतामयी माँ स्व. श्रीमती जमना देवी आचार्य रै
चरणां में सादर अश्रु सहित.....

विगत

- दरसाय धारै जी री 9
 म्हारी आधार 11
 पिछाण 12
 नेणां में तिरे सुपना 15
 पगलिया 17
 आ बीमारी नीं है 19
 जिनायर 22
 खुद ने देखणी 24
 साघ 25
 कूण है बो 27
 धारी सांघ 29
 'कूण?' 30
 क्यूं मणायी मिनख 32
 आस्था 34
 रघाय 35
 आखर लीला 37
 मुद्ठी भर उजियाळी (1) 39
 मुद्ठी भर उजियाळी (2) 40
 मुद्ठी भर उजियाळी (3) 42
 शिय चा शय 43
 तू अर म्हें 45
 तू आमी 46
 आँख्यां सूँ छळ्ळें 47
 धारी ओळूं आवै 48
 मिलाण 50
 आर्ट 52
 सतरंगी काया 54
 आफरीज्योडी पून 55
 सुभाय 57
 पाणी अर पत्थर 58
 बदळाय 59
 जूता 62
 घानणो 63
 कीं चितराम 64
 'हटके' 66
 अहिंसा 67
 म्हने जावण दे 68
 म्हारी गांव 71
 गांव री रैवे 73
 म्हारी सैर 74
 खांचा 75
 दिन अर रात्यां 76
 पखेरु 77
 घाल मुसाफिर 78
 फौजी 79

दरसाव थारै जी रौ

कदे कदे
जद म्हें थारै
नैड़ो आय'र
म्हारी आंख्यां वन्द करूं
तो म्हनै दीसै
दरसाव थारै हिरदै री
इयां लागै
जाणें एक पांखी
फड़फड़ीजती
ठानीं क्यूं छटपटावती
बिना सगती रै
वार वार खडौं हुय
चक्कर काटती
एक सूखै टूठ री।
फेर पड़ जांवती
घणी ताळ
टूठ रै ऊपर
धूमतां धूमतां
अचाणचक
तड़ाळ खाय'र
आय पड़ै नीचै
धरती पर, अर कीं देर वाद
हुय जावै
एक दम शांत
फेर नीं काटै चक्कर
यो टूठड़ै रै च्यारुमेर

मैं उण वखत
थारै हिरदै री दरसाव
देखणौ चन्द कर
देखण लाग जावूं
थारै मूण्डै खांनी
क्यूं के उण वखत
झरता हुवै आंरू
थारै नैणां सूं
टप...टप...टप... ।

म्हारै आधार

जमीं पर रैय'र
वात करणो नीं जाणूं म्हें
म्हनै आछो लागै
हवा में उडणौ।
इण खातर ही
कदे खिसकै कोनी
म्हारै पगां हेठली जमीं।
म्हें ठोकर खाय'र
कदे नीं पड़ियौ।
क्यूं के
हवा में भाटा नीं हुवै।
म्हें म्हारै पगां ने
कष्ट नीं देवूं
हवा चलावै म्हनै
हवा उडावै म्हनै
इण खातर
थकणै अर थमणै री तो
वात ही कठै आवै।
म्हें हवा में उडूं, पण
फेर भी म्हें
आधार हीन कोनी
क्यूं के
जिण हवा में म्हें उडूं
उण री जड़ां
समायोड़ी है
इण जमीं में घणी ऊंडी
ठेठ मांय।

पिछाण

म्हें थने
कों भी नाम देवणों
ठीक नीं समझूं
क्यूं के
तू आज खड़ी है
म्हारै सामीं
एक अणवूझी आडी वण'र।
म्हने इचरज है के
म्हें क्यूं नीं सोध पायी
अवार ताई
थारी उत्तर।
जद कदे लागि है म्हने
के अवे तो
म्हें थारै नैड़ी हूं
तो निजर आवै
थारै अर म्हारै विचाळे
एक लाम्यो फसली।
म्हारी अणवूझी आडी!
ज्युं-ज्युं
म्हें थने सुळझाऊं
तू है के
और उळझती जावे।
पैला म्हें
कांघ सामीं

जावण सूं डरती
 आज भी घवराऊँ
 पण अवै
 खुद ने देखूं
 कांच में नीं
 थारी आख्यां में ।
 तू काई है?
 म्हैं तो क्या
 तू खुद भी नीं जाणें ।
 म्हैं सोचूं के
 तू खुद ने
 बांध राख्यौ है
 एक छोटी सी सीमा में ।
 म्हनै लागै
 के थनै चाहिजै
 खुलीपण अर सुतन्तरता
 पण थारै काळजै
 वा हिम्मत नीं है
 जकी तोड़ सकै
 थारै खुद रा
 तांथ्योड़ा वधन ।
 तू आपोआप खींची है
 आपरै ही च्यारुमेर
 लाम्बी लिछमण रेखा
 अर इण रेखा. में
 रावण तो क्या
 राम भी नीं आ सकै ।
 तूं म्हारै सूं उम्मीद मत राख ।
 जद तू आप ही
 पग नीं उटादै

तो मैं किण तरै लांगू
थारी सीमावां ।
म्हारी यात मान
एक मिनख साइनै
कांच सामी जा
अर देख, निरख
के तू वो नी है
जकी तू
खुद ने जाणें, समझै ।

नैणां में तिरै सुपना

म्हारै द्वियै जियै रै
आसै पासै
भणभणावै
म्हारा सुपना
म्हारी इच्छावा ।
म्हारी आख्या रै
पाणी मे तिरना सुपना
कटे दूय जायै
कदे तिरना दासै ।
इसा सुपना
जका
काल रै नावडै सुं
वदरंग हुयोडै
कपडै ज्युं
कालजियै में
उठण आळी
काळी पीळी आंधी में
फगत लैगयै
उड नीं सकै
तणीं सुं
वध्योड़ा हुवण रै कारण ।
नैणां री पाणी
दैवतो दैवतो
कदे न कदे तो सूखै ई'ज
अर सुपना हुय जावै

सूखो खेलरौ
वण्योड़ा सुपना ने
कदे न कटे
उडा'र ले जावै
तेज पून गै लैगका
आपरै सागै
ना जाणे कटै
किण टीड़?

पगलिया

घूमती घूमती
निकळ'र आयग्यो हूं
गांव सूं खारसी दूर
धरतै पगां सूं
दोरी दोरी चालती
न जाणें
काई सोध रह्यां हूं ।
चालती चालती
अचाणचक
उण रेत में
म्हारा पग क्युं थमग्या
म्हें मुड'र देख्यी
खारसी दूर
जटे ताई निजर आवै
धटे सूं ले'र
अटे ताई
रेत रे समदन पर
मण्ड्योडा दीखै
म्हने म्हारा पगलिया ।
अचाणचक
निजरां ऊपर गई
आभौ है, पण वो
आसमानी नीं है
गोनलिया आर्भ
गोनलिया धरती ।

इण दोनां रे विचाळी
 फगत म्हें, और कोई नीं
 दूर दूर
 ठेठ ताई दीखी
 गेत री समदर
 मिनखा री इच्छायां ज्युं
 फलयोडी रेत।
 पूटी चाल पड्यी हूं
 की सोच'र
 पगां रे वी हां
 गैनाणां माथे
 जका मण्ड्या हा
 आयने वखत।

आ बीमारी नी है

मैं नी जागूं
के तळाव रै सङ्गोडै
अर गिन्दतै पांणी में
कीं धखत
लैरावतै रैवण सूं
म्हानै क्यूं लागै
के जाणें सी कीं पा लियौ हुवै
अर ठा नीं क्यूं
इयां लागै
के विरखा में भीजर
म्हे कर रह्या हां निभाव
माइतां री
किणी परम्परा री।
अवै सायत आप जाणसौ
के आ कोई
दिमागी बीमारी है
नई सा आप गलत जाण्यो
म्हे पूरी सावचेती में करां आ बात
क्यूं के म्हे करणीं चावां
विरखा अर तळाव रै
हुवणी ने सारयक।
आप नीं मानौला

के म्हे तळाव रे तळे में
 वार वार जाय'र रोधा वो
 जकी वटै नी है
 अर हुय भी नी सकै।
 या विरखा में भीज'र
 म्हानै वो आनन्द आवै
 जकी रटैनलीस स्टील रे
 फव्यारै में
 आवणी चाहिजे
 वो ही'ज फव्यारी
 जकै ने आपरै
 न्हावण घर में लगावण री हिम्मत
 नी जुटा पायी है
 म्हां मां सू
 कोई भी ओजूं ताई।
 आप ठीक कैवो
 के सूगळै पाणी सूं
 खाज खुजळी
 पचिया फोड़ा हुय सकै
 अर तळाव में तो
 किण 'चीज' री कमी हुवै?
 आप री वात सिर माथै
 के घर री पाणी हुवै
 सांतरै, निरमळ
 अर निरोग
 साथै ही मीठी भी
 पण हर रोज नी तो
 कदे कदास

वण जावै
म्हारी कमजोरी ।
अरदास है
बुरी ना मान्या
म्हे विरखा में भीजसां
तळाव में न्हांसा
वस ।

जिनावर

म्हारै हाथां री ताकत
भेळी हुय
जाय वसी
म्हारै माथे में
अर उछाळा मारै
घड़ी घड़ी, छिण छिण
वठीठा आवै
दिमाग री नाड्यां ने
आपरी ताकत
अजमावण सारु ।

म्हारी सोच रै
आसै पासै
घेरा घालै
केई काळा माछर
कानां री फेरी काढती
माख्यां री
भणभणाट ने
अणसुणौ करणौ चावूं
पण कर नीं पावूं ।

म्हारी दिमागी ताकत में
लपटीजियोडा
केई ऊंदरा
म्हारै आदररां

म्हारै असूलां
म्हारी सभ्यता
म्हारी संस्कृति
अर म्हारै मिनखापणै री
इमारतां री नीवां ने
आपरै तीखै पंजां सुं
कर देवै पोलीफस
खोखली
अर कदे, जद
पड़ जावै
वै इमारतां
भरभराय
उण वखत, म्है मिनख
वण जायूं हूं
मिनख दाई
दीखण आळी
एक जिनायर ।

खुद ने देखणौ

अयै आँख्यां ने
देखण खातर
दरकार नी है
किणी धीज यस्त री।
जद भी उण ने
की मन भावणौ
नी दीखसी तो
या जाणें है
के उण रै आप रै मांम भी तो
धस्योड़ी है एक दुनिया
उण रौ आप रौ संसार।
या उण ने ही'ज देखैला
या जाणै के
खं खं खड़ी कर देवण आळी हुये
खुद में उत्तर'र
खुद ने देखणौ।

साच

राच
कीं ठा क्यू हुवै
इतरौ भयानक
अर डरावणी
किणी जंगळी
जिनावर री भांत
निरदयी अर मिनख झावणौ।
म्हारै लारै तो
खास तीर सूं लागोड़ी है
उण वखत सूं
जद सूं म्हारौ
वोट लागण लागग्यो।

हाथ लाम्बी जीभ काढ़
दौड़ती आवै
आपरै पंजा ने खुजळावती
म्हारै खानी
जाणै के म्हनै
पकड़ ई लेसी
पण म्हें
म्हें कटे कम हूँ
म्हें तो हवा में उडणौ भी जाणूं
म्हें तो छेडू उणने
सांधी कैयूं
वड़ी मजी आवै

उण री नकल्यां कग्ण में।

यो गरीब दासियै आळै ज्युं

देखै मनै, पण फेर

रीस खाय

हाथ पग पटकतीं

फूंफाड़ा करतीं

निवळी होय देखै

आपो आप ने, पूरी

ऊपर सुं लेय'र हेठै ताई।

साच, जिण री आपा यात कर रह्या हां।

उण रै पग हुवै

फगत पग

अर मँ उड'र छोड़ सकूं

उण ने घणों ई लारै के यो

कदे नीं पकड़ सकै मनै

अर, ओ ई तो है

सवसूं बडी साच।

कूण है बो

आपरे ही'ज
च्यास्मेर
धूमती विना रुक्यां
अर, खुद ने ही'ज
देखती
अंजाणी निजरां सूं
इयां लागे के
खुद सूं ही करती हुवै
जाण पिछाण ।
रस्तै वेंवती वेंवती
रुक जावती
झटके सूं
चमगुंगी हुयोडी ।
कदे देखै
ऊँची इमारतां
कदे उडता हवाई जहाज
काळी दराख सडक्यां .
अर कदे
हवा रे लैरके ज्यूं
आवती जावती
मोटरां गाड्यां
आभै उडता
चिडी कागला कवूतर
खंख अर धूवै सूं
न्हायता खंख
अर राम जाणें काई काई

सौ की देख'र
वो देखै
आपो आप ने
उलझयोड़ी निजरां सूं
केई ताळ ताई।
फेर चालण लागै
आप रै मारग
वो मिनख कूण है?
मै, तू, वो
या आपां सव।

थारौ सांच

थारी हरेक ने
नापण री कोसिस
घटावै है कद
थारौ खुद री।

थारी ऊँचाई पर
जावण री
विना सींग पूंछ री इच्छा
थनै लाय पटकै
ठेठ रसातल में।

थारी ज्ञान वधारण री
अणमांवती बायड़
थनै दरसावै
परलै दरजै री मूरख।

थारी 'सावू' वणन री चाल
पड़ै क्रमेस ऊँधी
अर तू रैय जावै
फगत एक विलांद।

‘कूण?’

जीवन रै हरेक छिण ने
निरखता थकां
अर कदे कदे
खुद ने परखतां थकां
की दया रा भाव उपजै
अपणै आप सारु।

कदे जीव हुळसै
के आपां जी रह्यां हां
कदे उटै टीस
के आपां तो
छिण छिण मर रह्या हां।

आभी चुपचाप
गूंगी हुयोड़ी
धरती, चोर निजरां सूं देखती
के सायत उण ने
ठा नी पड़ै
पण दोनां रै विचाळै
नाग आळै ज्यूं
फण फैलायोड़ी
एक सवाल
एक आडी
‘कूण?’
मैं मींचली म्हारी आँख्यां
म्हारै सूं नी देखीजै

ओ डरावणी दरसाव ।
कीं ताळ पछे
म्हारै कानां में
गूंजण लाग जावै
घणी जोर जोर सुं
यो ई'ज भयानक प्रश्न
कूण? कूण? कूण?
प्रश्न अर उत्तर
आपस में करै घमसाण
कीं देर ताई
बाधेड़ी करतां करतां
अचाणचक
चीर'र निकळ जावै
म्हारी काळजी ।
म्हें ओजूं ताई
संभाळ रह्यी हूँ
म्हारा जखम
म्हारा घाव ।

क्यूं वणायौ मिनख

हे परमात्मा
थनै आ काई सूझी?
क्यूं वणा न्हांख्यौ
तू म्हनै एक मिनख ।
जे थनै कीं न कीं
वणाणी जखरी ही ही
तो तू म्हनै
वजाय मिनख रै
वणा देती
एक पत्थर
एक भाटी ।
तू नी जाणें
इण संसार में
भाटी हुयर रैवण सुं
कीं वणौ ओखी है
मिनख हुय'र जीवणी ।
जे म्हें भाटी हुवती
तो म्हारै खं खं में
दरद नीं वैवती
अर नीं ही
म्हारी पोर पोर में
फूटती पीड
भलां ई मारग में पड्यौ
खावती ठोकरां
पण, मिनख वण'र
आपरै हेताळुयां री

टोकरां री दरद
कीं घणीं जानलोवा हुवे ।

भाटी वण'ग भी
जे भाग कीं ठीकटाक हुंवता
तो किणी कलाकार री
हाथ लाग जावती
अर म्हने भी मिला जावती
थारै दाईं
राम या किरान जी री
उणियारौ ।

अर नीं भी वणती भगवान
तो भी सुखां री हेठै
उण री हेत री
छिया तो मिला जावती ।

पण, नीं भगवान
ओ काम तू काईं करपीं?
म्हने मिनख वणा दियी
धने ना सही
म्हने घणीं अफतोस है ।

आस्था

कदे कदे
किलाण लाग जायै
म्कारी आस्था री इमारतां
हर उण घटना रै पटै
जकी म्कारै नीं घायतै भी घटी।

म्कारी आस्था
नियळी कोनी
सयळ है
इणी- घायत वा घायै
के यो ई हुयणीं घाहिजे
जको वा घायै।
पण हुयै यो मी'ज
जको हुयणी है
अर होणी ने
ना म्हेँ टाळ सकूं
ना म्कारी आस्था
घायै, वा कितरी भी
सयळ क्यूं ना हुयी।

रचाव

कदे कदे
म्हारै मांय री मांय
की मथीजै
घुटीजै, अर लागै
के जाणें म्हैं
म्हैं नीं हूँ।
म्हारै रगत में
आवण लाग जाटै
की गरमास
अर म्हैं भूल जाऊँ
के म्हैं कूण हूँ
आप कूण हौ?
म्हारी खं खं
खड़ी होय झिंझोड़ै
म्हारी आत्मा ने
म्हारै मन रै मांय
मचै जोर री हाकी।
की ताळ पछै
डील रै मांय री
अफरातफरी हुवण लागै
की कीं सावळ
म्हने लागै के टण्डी टण्डी
मधरी मधरी पून
वैवण लाग रैयी है

मगरे काळजे माय ।
री की हुप जागे
सायळ, पैला गिराी
अर भौं
कागद कलम ले'र
बैठ जाऊं
की न की रचाय साख ।

आखर लीला

म्हारी डायरी में
म्हारै हाथां सूं
विछायोड़ा
आखरां में
कदे कदे
म्हनै दीखै
म्हारी खुद री उणियारी ।

कदे कदे
जद आसै पारै
कोई नीं हुवै
तो म्हारै
गीतां अर कवितावां रा
सवद
खूंटो तोड़ाय
वारै आय
हवा में तिरण लाग जावै ।

म्हारै कमरे में
आखर ही आखर
जाणें
गोठ मनावण ने
भेळा हुया हुवै
मात्रावां अर व्याकरण रै
छन्द अर 'मीटर' रै
बंधन सू

मुगत होय
सुतन्तरता सूं
आखर
खूव गफड घाली
नाचै हरै
अर खेली
लुकमीचणी
म्हारै ऊपर।

जोर जोर सूं
जाण बूझ
वेसुरा होय गावै
उणीं'ज गीतां ने
जिण सू
वै निकळ्या है।

मुट्ठी भर उजियाळी (१)

निजरां सूं कीं कैवणी
मूण्डै सूं कीं
कैवण सूं घती हुवै
असरदार
म्हें सीखग्यौ।
म्हें जाणग्यौ
के रात रै अंधारै में
न्हायोड़ी धरती
जे चंदरमा सूं मांग लेवै
मुट्ठी भर उजियाळी
तो चंदरमा
मूण्डौ फेर'र खिसक जावै
अर घणी वार
वो ई चंदरमा
दिन थकै ई आय धमकै
धरती री छाती पर
अणमांवती
उजियाळी लै'र।

मुट्ठी भर उजियाळी (२)

तू आय पाटी
थारि जाणूं सूं
म्हने लाखावे कीं खाली खाली
थारो ऱ्हासी रे टहाके मांय
म्हने सुणीजता
जिनगाणी रा गीत
थारो म्हारे खने
आयणी लागती जाणे
पृथ्वी काळ रेयी हुवे
सृज नी फेरी
अर दिन रात रो वणनीं
जाणे थारे कारण ही
हुय रेयो हे ।
थारे सामीं
घणी वार भरीजी
म्हारी आंख्यां
म्हारे उण हेत रा
कीं छांटा तो लाग्या हुसी थारे
जकीं निकळ्यां ही
म्हारी आंख्यां सूं ।
तू म्हने याद नीं आवे
क्युं के तू म्हने
याद ई'ज रेवे ।
तू वणजा
गोळ मटोळ फूठरी सो

चंदरमा
अर म्हारै डागळै रै
ऊपर आय'र
थारै अपार खजानै सूं
म्हणै दे जा फगत
मुट्ठी भर उजियाळी ।

मुट्ठी भर उजियाळी (३)

घुप्य अंधारै में
डूव्यी एक सैर
ताकती उम्मीद सूं
आभै खांनी
सोधतो
आपरै खातर
कोई सूरज ।

वावा आदम रै जुग री
वूछी इमारतां री
भीत्यां री सेर्यां में
ऊग्योडा
आक रा पौधा
अडीकै भीत्यां रै
और फाटण ने ।

निजर वचाय
खिसकणी री फिराक में
चंदरमा
देय जावै
मुट्ठी भर उजियाळी ।

अघाणघक
चुंधियाय जावै
अंधारै सैर री आँख्या
हडयडा जावै
सूरज सूरज करती सैर ।

शिव या शव

म्हारी आत्मा
तू म्हणै
सुण सकै तो सुण
हैं एक डील हूँ।
थारो अर म्हारी नाती
दूण सिस्टी सूं भी
की पैला रो हे
पण ठा नी क्यूं
तू बदळती रैवै
थारो खोळियी
वार वार
घणी बार, अर
खिड़क्यां पर रै जावै
थारै हाथां सूं भाण्ड्योडा
वी शरीरां रा नांव
वठै, सायत म्हें कोनी
अर हुवणो भी नीं चावूं।
म्हें तो फगत
आ चावूं
के तू म्हारै मांय
कविता बण'र
म्हारी नस नस में वैव
अर स्वर बण'र
म्हारै खं खं में गूंज।
म्हारी आत्मा
अवकी बार मत होईजे

अळगी थारै
इण शरीर सूं
तू तो जाणें ई'ज तै
के आत्मा-शरीर मिलै
तो वणै एक शिव।
आत्मा अर शरीर
जद हुय जावै
एक दूजै सूं दूर
तो वणै शव।
अवै तू ही सोच
तू म्हनै की रूप में
देखणी चावै?
शिव या शव

तू अर मैं

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
बीज गणित रै
किणी उलझयोड़ै
सवाल री भांत
जिण ने मैं
घणी ताळ सूं कर रह्यौ हूँ
सुळझावण री कोशिश।

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
किणी अणजाणी भासा रै
एक सवद री भांत
अर मैं
मैं सुनसान
अर सरणाऽ पुस्तकालय में
किताब्यां र ढेर में वैठ्यौ
रोध रह्यौ हूँ थारी अरथ।

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
एक उफणतै समदर री
एक लैर री भांत
अर मैं एक किनारी
कणै तू म्हारै
घणी नैड़ी
कणै ई खारी दूर।

तू आभी

तू एक आत्मा ही
मत्तलव आभी
घणौ लगदी बगदी
अणुगौ पैजाग निमोदी
जडीने देखां
बटीने तू, फगत तू
भौ घने देख देख
कगौ अणुभी
आज भी हुये
घणौ दगरज
के हतरी बरी शीज ने
यणायण आळी
आप किलगी बरी हुरी
कुण जाणे?

आँख्याँ सूँ छळकै ५

हेत किणी री
वण के पाणी
आँख्याँ सूँ छळकै ।
नैणां रा सुपना
मुरझावै
जागै रात्यां
नीद न आवै
याद किणी री
आँसू वण के
आँख्याँ सूँ छळकै ।
दुखती मन अर
थकती काया
बीत्या दिन क्यूं
फेर न आया
वात किणी री
वण के पाणी
आँख्याँ सूँ छळकै ।
सरणाटी सव
ओर लखावै
मन ने कोई
चीज न भावै
दूर किणी सूँ
हुवणी री दुख
आँख्याँ सूँ छळकै ।

थारी ओळू आवै

म्हारे मन म मीन
थारी विन
थारी आत्मा पर
गुणा गुणा मदि
भगदुमोदी करती
थारा मोल
थारी घात
थारी रोग
थारी साथ
भै घरता घरता भूल नी घाऊंला
अर जद जद भी
दण दुनिया में आऊंला
म्हारे रघ्योदा गीत
थारि मन में जरर गुंजाऊंला ।
म्हारे अन्तर रा उगारा
जद म्हने थारी ओळू आवै
तो म्हारे नेणां सूं छळकं जळ
अर मन में हुवे
कसमसाट
थारि सूं मिलणे री
उण दखत मन ने
समझावण सार
उठा उठा'र देखूं

थारी सैनाण्या

थारी निशाण्यां

अर होंटां सूं लगा लू

उण सब ने

एक एक कर ।

मिलाप

म जाने मनु?
मैं चाकली भुग में आये हूँ
दने अलख लाई
धारी परछाई
भारी छाया दान
भारे लारे लारे हैदे।

दने देखन हूँ
भने मिने
एक रागता
दिन माई दिन
धिकादन रास।

तू नो मानेला
मैं रागी कोनी
अरणे आय हूँ
मैं खुद ने देवू गजा
धारे हूँ रसानी नी

तू नैगां में
गैगाई लो
धरती पर चाले
मैं आँख्यां में
ऊँचाई लो अगभे म उदू।
घणा लाम्बी फारली है
धारे अर भारे गिवाही

तू नों छोड़ सकै
आपरी जमीन
ना उतर सकूं मैं
म्हारै आसमान सूं नीचै ।
पण इण में
पछतावै री बात कोनी
आपां दोनूं जाणा
के जमीन आसमान
री मिलाण
कटे नों होवै ।

आर्ट

मैं ताश खेलणों
नी जाणू, पण
वां रे लार्गे मण्डूयोडा
रंग विरंगा फोटू
म्हने घणा भावे।
म्हने टा नी पडे
के कृण है वादशाह
कृण वेगम
कृण है चिडी
अर किरती जोकर।
पण, एक घात है
ताश गी घर म्हे
सांतरी घणावू
सगळा पत्ता जोड'र
ऊंची घर।
घर में सय रे सामे
वादशाह अर
वेगम भी हुवे
पण फेर भी
ओ घर
हवा रे एक ही'ज
लैरके सूं
खड़खड़ाय
आय पडे नीचे
अर विखर जावे
सगळा पत्ता
लोप हुय जावे

बादशाह अर वीं री महल ।
पत्ता री ढिगली
म्हारै आंगणै में
दिखर जावै बेतरतीव
इयां लागै जाणें
कैनवास मारथै
ऊंधी-सूंवी
आडी-तिरछी
बुरस मार'र
वणायोडी हुवै कोई
'मॉडर्न आर्ट' री नमूना ।

सतरंगी काया

गती हुयोडी आख्यां
पीळी हुळक मूंडी
वखत रूं पैली
काळारती गमायोडा
धीळा केरा
चामडी रै मांय रूं
झाकौ घालती
हरी टांच नाट्यां
आख्यां नीचे फेल्योडी
वैगणी अमृजी
अर डोळां रै
आसै पारै तिरता
गुलावी डोग
ऐडे गेडे लैगवती
काळमस
म्हें मानग्यो
सांच कैवै है लोग
के जीवन है
सतरंगी इंद्रधनुष ।

आफरीज्योड़ी पून

म्हें म्हारै घरा रा
वारी वाण्डा
गोंखा क्वाड
सै वन्द करणा चाऊं
पण कर नीं पा रह्यौ हूँ।

वारली आफरी चढ्योड़ी
पून म्हारै घर रै
धोरी मवडै रा
चूळिया हिलावै
जद आडी नीं खुलै तो
सेरुयां मांय कर आवै।

इण हवा ने
घर में आवण सूं रोकणी
घणी जखरी है
नीं तो कीं नीं वचैली
म्हारै इण मिन्दर जिसै घर में
साळ में लागोड़ी
सुरसत मां री फोटू
आय पडैली नीचै अर
आळै में पड़ी
दादोस्ता रै हाथ री
गीता अर रामायण री
हुय जासी
पानीं पानीं अळगी

टूट जाती आगणै मं
 लागोडी तुळटी जं गं
 नान्को सो पीधी
 बुझ जाती मिन्दर मं
 टाकुर जी गै दीपक
 उबड जाती
 म्कारं तन ग गाभा
 हवा रै साथै आयादी खख मं
 पिछाण कियं करगु
 म्कै म्कारी मां, दैन
 वेटी, भाई अर जोरा गं

लोप हुय जाती
 घर नी मै'री शांति
 इण विकराळ हवा रै आणै गुं
 जकी जीसा रै
 मिन्दर में रोज
 पाठ रणै सुं थर्पाजी है।
 ओजूं ताई
 भचीदे है हवा
 म्कारा वाण्डा पूरै वेग सु
 पण म्कनै
 वचाणी है म्कारी घर
 ई पून रै हमली सुं
 वचाणी है
 घर री मान मग्जाड।

सुभाव

'जलम देय'र
वडौ करणी
अर फेर काट देवणौ
या पगां सूं किचरणौ
मिनख री
ओ ई सुभाव
उण ने वणावै
सै जीवा सूं अळगौ'

वाग री नान्ही दूव
रोवती, गरळांवती
इतरौ कैयी ई'ज ही के
अचाणचक
एक पग
उण री कचरी काढ़
आगै वधग्यो
दूव वापड़ी
अवै नीं रैयी
रोवण जोगी भी ।

पाणी अर पत्थर

जद कदे भी देखूं हूँ
म्हारै गांव री पाळ पर पडिया
ऊँधा-सीधा
आडा-तिरछा भाटा ने
जिण री एक दूजै सूँ
कीं रिशती
कोई जुड़ाव
जोया नीं लाधै ।

पाणी री एक वूद पर
दूजी वंद न्हांखी
दोनूं रिळमिळ'र
वणगी पाणी री
एक नूवी वूद ।

कदे कदे सोचूं
पाणी री टोपे ज्यूँ
भाटै ने भी आवती
रिळमिळ'र एक हुवणी तो
कितरी आछी हुवती ।

बदलाव

म्हारै वाग रा फूल
लारलै लाम्बै वखत सूं
फगत खिलण री
लीक पीट रह्या है ।

म्हारै वाग में
आजकल
काची कळ्यां नीं हुवै
डाळी सूं निकळै
पूरौ री पूरौ फूल ।

अटै रा
'सूरजमुखी अवै
सूरज रै
आणै जाणै री
'टेशन' नीं पाळै ।

अटै री
छुईं मुईं रौ तो
कैवणौ ही क्या
इण ने छूवी तो छूवी
दोनूं हाथां सूं झाललो
वा शरम सूं
भेळी नी हुवै ।

बदलाव

म्हारै बाग रा फूल
लारलै लाम्बै वखत सूं
फगत खिलण री
लीक पीट रह्या है।

म्हारै बाग में
आजकल
काची कळ्यां नीं हुवै
डाळी सूं निकळै
पूरौ री पूरौ फूल।

अटै रा
सूरजमुखी अवै
सूरज रै
आणै जाणै री
'टेशन' नीं पाळै।

अटै री
छुईं मुईं री तो
कैवणीं ही क्या
इण ने छूवीं तो छूवीं
दोनूं हाथां सूं झाललो
वा शरम सूं
मेळीं नीं हुवै।

भंवरी री गूजणी
 अर कोयल री कूक
 जाणें चीसादुया वणगी है।
 म्हें नित री देखूं
 के हरेक दिरखत
 आपरी जड़ा
 फेलावण सारु
 लागोडी है
 दूजां री जडा काटण में।
 दिनूगै
 चिड्यां, कमेड्यां
 मोर पपैयां ने
 नीं वच्यो है
 फालतू वखत
 मोर री सुवागत करण खातर।
 म्हारी मन कळपीजै
 विना खसवू रा फूल देख
 अळसीजियोडी पत्यां देख
 हर डाळी ने आपरै मायं
 मरत देख
 पीळै पत्तां रा होंसला
 परत देख।
 म्हारी जी घमटीजै
 कोयल री
 मांग लायोडी बोली सूं
 म्हें राजी कोनी
 उधार लायोडी
 हरियाळी सूं
 म्हने दाय नी आवै
 हर डाळी री

खुद ने
पूरी पेड़ समझणी
ठीक नीं लागै
म्हने वेल्यां री
विना नीचे देख्यां
ऊपर चढ़णी ।
म्हने घणी
घणी अखरै
वाग में
हरेक री
आप मत्तै चालणी ।

जूता

फेंक दिया है उटार
घर र पिछोकड़े में
कचरे र सागै
वै काळिया जूता
जका काल ताई
पगां सूं भी
वेसी कीमती हा
चमचम करता
आळें में धरीजता
जतनां सूं
आज वै वेकार है
कचरी है
आपरी सौं कीं
दे चुकणी र वाद ।

चानणो

घणी ताळ जद
अंधारै मारग
कोई नीं आयी
तो झूपडी रै आगै
लटक्योडै
लालटेण ने लखायी
'म्हें वेकार में ही
तेज पून सूं
माथी लगाऊ
अडीने कोई नीं आवै
किण ने रस्ती दिखाऊं
जकी भी इण जंगळ
आधी रात में आवैला
उण रै मन में
चानणो तो
पैली सूं ही हुवैला'
हवा री लैरकी आयी
घप्प.....
लालटेण बुझग्यी।

की चितराम

कदे कदे
जीवन में आवै
इण भांत रा दिन
जद लागी
के जाणें
राम जी ले रह्या हुवै
सीता माँ री
अगन परीक्षा
वार-वार ।

घन में तिरसी मिरग
पाणी सोधती सोधती
निढाळ होय
इसी पडै
के फेर वो
कदे नीं सोधै पाणी ।

भोरान भोर
मजूरी खातर
निसरूयी मिनख
सिंज्या ने पूटी आवै
जूत्यां ने आधी कर'र
अर सोय जावै
पाणी री गुटकी पीर'र
दूजै दिन री आस पर ।

झूंपड़ी में
माँचै पर पड़्यौ
ताव सूं वळतौ डील
दवायां ने
अडीकतौ अडीकतौ
छोड़ जावै
ओ नश्वर संसार।

कच्ची वस्ती में
लीरिया पूरिया बांध'र
पणायोड़ी एक टापरी
खाडा कोचरां सूं निसरतौ
चूलड़ी रौ धूँवौ
अर, काटीजियोडै टीण री
छजवाळ माथै पड़ियै
रेडियै सूं वाजतौ गीत
'इक वंगला वने न्यारा'।

‘हटके’

म्हारि बखत रा लोग
एदुयोड़ा लिख्योड़ा
डेढ़ हुसियार
सय रा सय
बणना चावै
भीड़ सू न्यारा
करणी चावै
‘कुछ हटके’
मैं दैट्यो हूँ
एक पुस्तकालय में
इत्तां मिनखां थकै
पसरयोड़ी है
सचेत सरणाटो ।
सव वांच रह्या है
विना छपीं
सादै कागदां री
किताब्यां
बड़ै मन चित्त सू ।

अहिंसा

संसद रै वा'र
लाग्योड़ी
गांधी बुद्ध
अर महावीर री
मूरत्यां देवै
अहिंसा री संदेश ।

सदन रै मांय
जाणै रै वाद
कीं भी करसका आपां
कुण देखै?

म्हने जावण दे

जावण दे म्हने पूठी
कटई गूंगी अर बोळी नीं कर देवे
म्हारी संवेदनावां ने
अठे री धीखती जिनगाणी
कटे मिटा नीं देवे
म्हारै मन री घड़कन ने
अठे री कानफाडू
दीडती भागती हाकौ
कटे म्हें भी एक
मसीन थण'र नीं रैय जावूं
थारै इण मसीनी रैर मांय ।

जावण दे म्हने
म्हें थनै
वटे नीं लेय जावूंला ।
क्यूं के वटे री
भारतीय रूप
थनै गंवार लागसी
खेतां में वैवती
अलमस्त पून
थनै दाय नीं आवैला
वटे री सोनलिया झांझरकौ,
मतयाळी भोर
थनै निटल्ली जीवन री

ऐसास करावैला
और तो और
दोपारै नीमडै री छियां में
धनै बाजरी री रोटी
अर कांदा
दाय नी आवैला ।

तू अठै री है
अठै री ही रै
चठै थारै कानां में
'एफ. एम' पर बाजती
'पीप' अर 'रिप'
'वी' अर 'एम टी.वी.' री हुल्लाड़
नी पड़सी तो जाणै
थारी तो
जीवणी ही कीयां हुसी ।

कम्प्यूटर री वेवसाइटां
अणगिण गाइयां री
रेलमपेल बिना
धनै जीवन बेकार लागसी ।

नी भायला
तू अठै ही रै
अर म्हनै जावण दे ।

जे म्हँ अठै रैयो तो
वेचणी पड़सी
म्हनै म्हारी आत्मा
भूलणी पड़सी
म्हनै म्हारी संस्कृति
नोचणा पड़सी
सैंग रिशतां नातां रा अरथ
ताक पर राखणी पड़सी

मनै म्हारौ भिनखापणी
अर बोलणी पड़सी
उधार री बोली
वणनी पड़री
एक जीवती जागती भाठी ।
ना भायला
म्हें अटै रैवण री
इत्ती मोटी रकम
नी चुका सकूं ।
म्हें जा रह्यी हूं
म्हारै गांव ।

म्हारौ गांव

कितरो सोवणी
अर मन भावणी लागि
भीरान भोर
माँ री आंगण बुहारणी
अर भाभीसा री
तुळसी सींचते सींचते
मधरै मधरै सुर में
भजन गावणी ।
घणी आछी लागै
सानी खावतां
वळधां रै गळै री
नान्ही नान्ही घंट्यां री बाजणी
अर दुहारी खातर त्यार
गायां री रंभावणी
कितरी मीठी लागि
बकर्यां अर मेमनां री
मिमियाती बोली
अर पिणघट माथे
हथाई करती
छोर्यां री हंसी
अर वां रै

मूण्डै सू रचीजती
जीवन री अनलिखी काण्यां
गांय री इण भोर' ने
भोर रै चितराम ने देखी
देखी अर जीवौ ।

गांव ही रैवै

राम करै
म्हारी गांव
गांव ही रैवै ।

खेतां में धान रैवै
ममता री मान रैवै
अलगूजा गूंजै तो
होटां में तान रैवै ।
वापू री ग्वाड़ी री
पंचां में मान रैवै

राम करै
म्हारी गांव
गांव ही रैवै ।

गवरल सी भाभी
ईसर सा भैया
वाखळ में वैल भैंस
ऊँट और गैया
जेठ री दुपहरियां में
पीपळ री छांव रैवै

राम करै
म्हारी गांव
गांव ही रैवै ।

म्हारौ सैर

म्हारलै सैर में
धरम रै नांव
लोई नीं वैवाइजै
हंसता खेलता घर
नीं उजाड़ीजै ।

म्हारै सैर में
हया में गूंगती अजान
अर तिरता भजन
अडीक राखै
एक दूसरै री
अर कदे कदे तो
रिळमिळ'र हुय जावै
एकाकार ।

म्हे सिंग्या री
अजान सुण'र करां
मिन्दर में दीया बत्ती ।
माथै ने खाली कर'र
आ कदे
म्हारलै सैर ।

खांचा

एक खांचादार
मोटी अलमारी ज्युं
हुवती जाय रैयी है
म्हारी सैर।

हर आदमी
वड़ वड़'र वैठ रह्यो है
आप आप रै खांचै मांय
आ सोच'र
के अवै नीं निकळणी है
म्हने म्हारे
खांचै ने छोड'र।

म्हने लखावै
खांचा में वैठां मिनखा रै
मन में भी
पड़ रह्या है
सायत केई खांचा।

दिन अर रात्यां

वीतै दिन अर वीतै रात्यां
कुण पूछै मनई री वात्यां ।

मन फंस जावै मकड जाळ में
खूब करै तड़फातोड़ी
पल पल छिण छिण घटै जिन्दगी
सांस घटै थोड़ी थोड़ी

डरूँ फरूँ सा दिन हुय जावै
हांफीज्योड़ी सूवै रात्यां ।

ओजीसाळी अवखायां री
उम्मीदां जद ठोकर खावै
पळक्यां जिण री करै वगावत
उण आँख्यां ने नींद न आवै

काळूँटी सो दिन लागै अर
धीळी धीळी लागै रात्यां ।

वेरी वणै वदन री कपड़ी
जाण वृझ पग टेढ़ा घालै
करै आंगळ्यां आ कुचमादी
खुद री काया गोभा घालै

पीडा भोगी दिन हुय जावै
मरै सिसकती नित री रात्यां ।

पखेरु

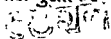
उडती पखेरु आसमान में
तिणका चूंच दवाए
नीड़ वणावूं आभै ऊपर
आगे बघती जाए।

च्यारूं दिशावां खुली हुई है।
किण ने जाऊं
समझ न आए
सोचै है पण, रुकै नहीं वो
उडती पंख फैलाए।

मन में जोश लैरका लेवै
आँख्यां में कीं
सुपना तैरे
पून रै सागै ऊँचाई पर
उडती उतर लगाए।

नीं सीख्यौ थकणी अर थमणी
बाधा आए
चलती जाए
बिना थक्यां पंछीड़ी चालै
रात हुवै दिन आए।

चाल मुसाफिर



चाल मुसाफिर मारग खोजां
सोच मती तू रूकणै की
आगै बघ जा पीछे मत मुड़
वात मती कर थमणै की ।

हिरदै में विश्वास थरपलै
कुछ ना कुछ तो पाणौ है
जग में ईश्वर भेज्या है तो
कुछ ना कुछ कर जाणौ है
मन में इच्छावां पैदा कर
सोच बहुत कुछ करणै की ।

चाल मुसाफिर मारग खोजां
रस्तै बीच रूकावट आसी
बाधा आसी पग पग में
दिन कुछ करियां गया जगत सूं
तो क्यूं आया इण जग में
जद तक थारी टौड न आवै
सोच मती तू थमणै की ।

चाल मुसाफिर मारग खोजां
तेज पून सूं लडै है दिवली
फेर भी वो हारै कोनी
जकै काळजै हिम्मत होवै
वो अबखायाँ धारै कोनी
तू दिवली बण मिटा अंधेरी
सोच मती तू बुझणै की ।
आगै बघ जा पीछे मत मुड़
वात मती कर थमणै की ।

फौजी

सात सलामां उण माता ने
जिण फौजीने जायी
एक शहीद री कथा सुणी तो
आँख में पाणी आयी ।

घर में शादी व्यांव हुयी चाये
नूची वीनणी आवै
घर रा रिश्ता राख किनारै
सीमा पर डट जावै ।

फौजी भूलै भूख प्यारस ने
मन में नहीं कोई इच्छा
ओ तन इण धरती ने देवूं
करुँ देश री रक्षा ।

आगे बधती कदम बढ़ाती
सिंह सरीखी गाजे
दुश्मन अपना ढोला पिटवा
भेळा कर कर भाजे ।

राई जितरी धरती खातर
तन सूं लोई बैयावै
हाथां में हथगोळी ले
दुश्मन खांनी बध जावै ।

दुश्मी री सजियोडी सेना
इक पळ में विखरावै
शत्रु पीठ दिखावै भांगे
मन ही मन घबरावै ।

गोळ्यां सूं वींधीजै काया
माता री गोदी सूवै
आँख्यां ने मीचण सूं पैली
चेटी मां ने कैवै ।

तू माता म्हें लाल हूँ थारी
जलम जलम री नातीं
नेच्ची हुंवती, वेसी थारी
सेवा म्हें कर पाती ।

इतरी कै अर आँख्यां मीची
काम देश रै आयी
उण रै मन में थ्यावरत ही के
जलम सफळ वण पायी ।

